उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांकः1015/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 21–08–2025

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की दिनांक 21 अगस्त, 2025 को वर्ष 2025–26 की सम्पन्न तेरहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की तेरहवीं बैठक, डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 21 अगस्त, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक एवं धान प्रजनक, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के कीट वैज्ञानिक व मौसम वैज्ञानिक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के वैज्ञानिक; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया (उपस्थिति संलग्न)।

सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (22–28 अगस्त, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के दौरान प्रदेश में मानसूनी सक्रियता बढ़ने से ज्यादातर भाग में वर्षा होने के कारण उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य के आसपास रहने जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से अधिक रहने की सम्भावना है। इस सप्ताह में 21–25 अगस्त के दौरान प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायु अंचलों में अलग–अलग दिनों में भारी वर्षा होने की भी सम्भावना है जिसमें उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र में कुल साप्ताहिक वर्षा सामान्य के आस–पास जबकि प्रदेश के दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं विध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा बुंदेलखण्ड क्षेत्र के पश्चिमी–उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य से अत्यधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से अधिक होने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा पश्चिमी मैदानी, दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से (2 से 4 डिग्री से.) कम; भाभर तराई क्षेत्र के शेष भाग तथा मध्य पश्चिमी मैदानी, मध्य मैदानी एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री से.) कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग तथा बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 28 से 30 डिग्री से.; उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं संलग्न पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 30 से 32 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के समस्त कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग, बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा विंध्य क्षेत्र के दक्षिण भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 24 से 26 डिग्री से. रहने की संभावना है।

मानसून ऋतु (01 जून से 21 अगस्त, 2025) के दौरान उत्तर प्रदेश में 525.7 मि.मी. सामान्य वर्षा के सापेक्ष कुल 524.7 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य के बराबर है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में 557.4 मिमी. सामान्य के सापेक्ष 12 प्रतिशत कम कुल 488.7 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 481.5 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष 20 प्रतिशत अधिक कुल 576.3 मि.मी. वर्षा दर्ज हुई।

कृषि विभाग से दिनांक 14 अगस्त, 2025 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 106.05 लाख हे. के सापेक्ष 108.67 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 102.47 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 65.00 लाख हे. के सापेक्ष 70.02 लाख हे. की पूर्ति हुई जो लक्ष्य का 107.73 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 8.83 लाख हे. के सापेक्ष 8.49 लाख हे. की बुवाई, ज्वार में 3.01

लाख हे. के सापेक्ष 3.01 लाख हे. की बुवाई, बाजरे के लक्ष्य 11.28 लाख हे. के सापेक्ष 10.87 लाख हे. की बुवाई, तिल फसल लक्ष्य 4.38 लाख हे. के सापेक्ष 4.18 लाख हे. एवं अरहर लक्ष्य 3.68 लाख हे. के सापेक्ष 3.72 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है। मूंगफली की फसल लक्ष्य 3.70 के सापेक्ष 3.18 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है एवं उर्द के लक्ष्य 4.83 सापेक्ष 3.81 तथा मूंग के लक्ष्य 0.47 के सापेक्ष 0.44 की बुवाई की जा चुकी है। सोयाबीन के लक्ष्य 0.35 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.41 की बुवाई की जा चुकी है।

बैठक में विचार–विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन व कृषि के अन्य क्षेत्रों हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गयेः–

- इस सप्ताह 21 से 25 अगस्त के दौरान प्रदेश के सभी कृषि जलवायु अंचलों में मध्यम से भारी वर्षा होने की संभावना है अतः इस दौरान कृषक भाई खेतों में किसी भी प्रकार के रासायनिक कीटनाशी/शाकनाशी व उर्वरकों का छिड़काव करने से बचें व खेतों में जलभराव की निकासी हेतु उचित प्रबंध करें।
- जलभराव वाले क्षेत्रों (5 से 10 से.मी.) में जलस्तर कम होने पर 7 से 10 दिन बाद यदि धान में यूरिया की टाप ड्रेसिंग संभव न हो तो 2.5 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णीय छिड़काव करें।
- जलभराव के दुष्प्रभाव को कम करने के लिये एन.पी.के. मिश्रण (19:19:19) के दो प्रतिशत घोल को दो से तीन बार छिड़काव करें।
- उपरहार क्षेत्रों में धान की फसल में खरपतवार नियन्त्रण हेतु निकाई–गुड़ाई करें तथा यथा संभव पैडीवीडर का प्रयोग करें, नियंत्रण न होने पर संस्तुति अनुसार शाकनाशियों का प्रयोग करें।
- खरीफ फसलों में जल भराव न होने दें, जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।
- बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में अक्टूबर माह में बोई जाने वाली गन्ने की फसल को प्राथमिकता दी जाये जिससे आगामी वर्ष में बाढ़ का समय आते–आते फसल का पर्याप्त विकास हो चुका हो।
- फलों के बाग में जल निकास की उचित व्यवस्था करें। आम, अमरूद, लीची, आंवला, कटहल, नींबू, जामुन, बेर, केला आदि के नवीन बाग लगायें।
- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत खुरपका एवं मुखपका (एफ.एम.डी.) बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- मौसम आधारित कृषि परामर्श की जानकारी लेने हेतु किसान भाई 'मेघदूत ऐप' का प्रयोग कर सकते हैं।
- स्थान विशिष्ट वास्तविक समय मौसम पूर्वानुमान की जानकारी हेतु 'ई ग्राम स्वाराज्य ऐप' का प्रयोग करें।
- जनपदवार दैनिक मौसम पूर्वानुमान एवं चेतावनी https://mausam-imd-gov-in/lucknow/mcdata/district-pdf तथा ग्राम स्तरीय/क्षेत्रीय मौसम पूर्वानुमान https://mausamgram-imd-gov-in/ पर प्राप्त किये जा सकते हैं।
- कृषक भाई कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं एफ.पी.ओ. से भी समय–समय पर सलाह लेते रहें।

धान की खेती

- रोपित धान में यदि खैरा रोग लगा है तो रोग नियंत्रण के लिये फसल पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट 2.5 किग्रा. बुझे हुये चूने अथवा यूरिया के साथ 1000 ली. पानी में मिलाकर प्रति हे. की दर से पर्णीय छिड़काव करें।
- इस सप्ताह में वर्षा की संभावना के दृष्टिगत जब मौसम अनुकूल हो तो ही रोपाई के 25–30 दिन बाद प्रथम टॉपड्रेसिंग तथा 45–50 दिन बाद द्वितीय टॉप ड्रेसिंग नत्रजन की शेष बची हुई मात्रा के एक चौथाई यूरिया से करें। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करते समय खेत में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो।
- इस सप्ताह वर्षा के दृष्टिगत मौसम के खुलने के उपरांत सकरी एवं चौड़ी पत्ती व मोथा खरपतवारों के नियंत्रण हेतु नमी की स्थिति में बिसपाईरीबैक सोडियम 10 प्रतिशत एस.सी. 0.2 ली. प्रति हे. 500 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

अरहर की खेती

- मौसम की अनुकूल दशा में बहार एवं पी.डी.ए.–11 की शुद्ध फसल के रूप में बुवाई की जा सकती है, परंतु कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. एवं बीज की मात्रा 20 से 25 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।

उर्द–मूँग की खेती

- यदि मौसम अनुकूल है तो जिन कृषकों ने उर्द की बुआई अभी तक किन्हीं कारणोंवश नहीं कर सके है, वह शेखर–1, शेखर–2 व शेखर–3 की बुआई पूर्ण करें।
- उर्द/मूंग की पत्तियों पर सुनहरें चकत्ते पड़ गये हों या सम्पूर्ण पत्ती पीली पड़ गयी हो तो यह पीला चित्रवर्ण रोग (यलोमोजेक) है। यह रोग सफेद मक्खियों द्वारा फैलता है। ऐसे रोगग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़कर जमीन में गाड़ दें।

मक्का की खेती

- मक्के की फसल अधिक पानी के प्रति संवेदनशील है अतः खेत में अधिक पानी की दशा में जल निकासी की व्यवस्था करें।
- मौसम व तापक्रम की स्थिति अनुकूल होने पर मक्का की बुवाई के 45–50 दिन बाद (सिल्किंग स्टेज) नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा की एक चौथाई टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें।
- जैविक विधि से कीट नियंत्रण हेतु ट्राइकोग्रामा अण्डयुक्त ट्राईकोकार्ड 50000 प्रति एकड़ की दर से पत्तियों की निचली सतह पर 5–6 दिन के अन्तर से दो बार नत्थी करें।

मूंगफली की खेती

- मूँगफली की बुआई के 30–35 दिन बाद दूसरी निकाई–गुड़ाई कर खर–पतवार नियंत्रण करें तथा हल्की–हल्की मिट्टी चढ़ाते रहे। खूटिया (पेगिग) बनते समय निराई गुड़ाई न करें।
- मूंगफली में टिक्का रोग लगने का समय है अतः सतर्क रहें। प्रकोप होने पर मौसम अनुकूल होने पर ही मैंकोजेब अथवा कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. 225 ग्राम/हे. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.4 किग्रा. अथवा जीरम 27 प्रतिशत तरल के 3 लीटर अथवा जीरम 80 प्रतिशत के 2 किग्रा. के 2–3 छिड़काव 10 दिन के अन्तर पर करें।

तिल की खेती

- तिल में रोएंदार सूँड़ी (विहार हेयरी कैटर पिलर) का प्रकोप होने पर प्रारम्भिक अवस्था में अण्ड समूह/सूँड़ियों को पत्तियों सहित तोड़कर केरोसिन युक्त पानी में डालकर नष्ट कर दें।

गन्ना की खेती

- गन्ने में बैक्टीरियल रॉट बीमारी के लक्षण दिखने पर संक्रमित पौधे को काटकर नष्ट कर दें तथा नियंत्रण हेतु मौसम अनुकूल होने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.01 प्रतिशत का गन्ने की पत्तियों पर छिड़काव करें।
- शरदकालीन गन्ने की बुवाई हेतु खाली खेत में ढ़ैचा की बुवाई की है तो 50 से 55 दिनों में उसे पलट दें।
- गन्ने की लंबाई पांच फुट से अधिक होने पर प्रथम बँधाई करें। प्रथम बँधाई हेतु गन्ने को लाइनों में एक लाइन के दो झुण्डों को एक साथ नीचे की सूखी पत्तियों से बँधाई करें।
- जिन क्षेत्रों में गन्ने के खेतों में पानी भर गया था और वर्तमान में खेत से पानी निकल चुका है। उन खेतों में जड़ विगलन (रूट रॉट) के प्रबंधन हेतु मौसम अनुकूल होने की दशा में फफूंदनाशी थायोफिनेट मिथाइल 70 डब्लू.पी. अथवा कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. का 02 ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर से गन्ने की जड़ों के पास ड्रेचिंग करें।
- लालसड़न रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें।

सब्जियों की खेती

- फूल गोभी की मध्यकालीन किस्में पूसा सेंथेटिक, पंत सुभ्रा, पूसा हिम ज्योति, पूसा सुभ्रा, पूसा दिपाली, पूसा हाईब्रिड–2, पूसा शरद, पंत गोभी–4, मोनालीसा आदि किस्मों का 500–600 ग्राम बीज प्रति हे0 की दर से नर्सरी तैयार कर लें।
- बैंगन की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए मौसम अनुकूल होने पर क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1ण्0 मिली0 मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- बैंगन की फसल में फोमोप्सिस ब्लाईट फलसड़न से बचाव के लिए मौसम अनुकूल होने पर थायोफिनेट मिथाइल की 1.00 से 1.50 मिली0 मात्रा/ली पानी के साथ घोलकर 15 दिन के अंतराल पर छिड़ाकव करें। फलों की तुड़ाई के बाद स्प्रे करे एवं अगली तुड़ाई 15 दिन बाद करें।

- हल्दी एवं अदरक में जल निकास का प्रबंध रखें।
- इस समय सब्जियों में कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों एवं वर्मीवाश की 1 लीटर मात्रा 500 से 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- केले में मौसम अनुकूल होने पर 50 से 60 ग्राम यूरिया 100 से 125 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौधें की दर से देकर गुड़ाई करें तथा बगल से निकलने वाली पुत्तियों की कटाई करें।
- फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें।
- आम में शूट गाल सिला एवं टेंट कैटरपिलर की रोकथाम हेतु मौसम अनुकूल होने पर क्यूनॉलफॉस अथवा डाईमेथोएट (2 मि.ली./लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- अमरूद में फल सड़न से बचाव हेतु मौसम अनुकूल होने पर मैनकोजेब (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- अमरूद में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 में 6 से 8 फिट की उचांई पर टहनियों में बांध कर लटकाए तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5ः प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा 20–25 दिन के अन्तराल पर ल्योर को बदलते रहना चाहिए।
- ऑवले में फल सड़न रोग की रोकथाम हेतु अनुकूल होने की दशा में बोरेक्स (6–8 ग्राम/लीटर पानी) को छिड़काव करें तथा उर्वरकों की संस्तुत मात्रा का थालों में प्रयोग करें।

पशुपालन

- नैपियर घास की जड़ों/रूट स्लिप की रोपाई करें, जिससे 4 से 5 वर्ष तक हरा चारा लगातार पशुओं को प्राप्त होता रहे।
- पशुओं के दानों को नमी से बचाये ताकि एफ्लाटाक्सिन से बाचव किया जा सकें।
- बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी/जूं के संक्रमण की संभावना प्रबल होती है। इसके बचाव हेतु पशु बाड़े में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जूं के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय।
- पशु के शरीर में व्यस्क बाह्य परजीवी के संक्रमण से बचाव हेतु किलनीनाशक दवा का उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से करें।
- वर्तमान मौसम में बाह्य एवं अन्तः परिजीवी के संक्रमण की सम्भावना प्रबल होती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि निकटतम पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सा अधिकारियों की सलाह से बाह्य एवं अन्तः परिजीवी नाशक दवाओं का उपयोग करें।
- छोटे पशुओं जैसे भेंड़ व बकरी को जलभराव क्षेत्र से बचायें। भेड़ों के पानी में भीगने के कारण उनका वजन बढ़ जाता है तथा वह बैठकर उठ नहीं पाती है जिससे उनकी पैरों की मांसपेशियां कमजोर हो जाती है साथ ही उनमें निमोनिया रोग की संभावना बढ़ जाती है।
- थनैला रोग से बचाव हेतु दूध निकालने से पहले एवं बाद में हाथों व थनों की अच्छी तरह पानी से सफाई करें तथा थनों को गीला न रहने दें। थनैला रोग के उपचार निकटतस्थ पशु चिकित्सालय से सम्पर्क कर लाभ प्राप्त करें।
- मुर्गियों को भीगने से बचायें। मुर्गियों के भीगने से तनाव के कारण अंडा उत्पादन प्रभावित होता है।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें, उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा मिलाकर ही खिलायें।
- पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. 18001805141 है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं0–1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

मत्स्य पालन

- तालाब में जल स्तर 1.5–2 मीटर बनाए रखें।
- तालाब में वर्षा का पानी आने से यदि जल अशुद्ध हो जाए तो जल की आंशिक निकासी कर साफ पानी भरें।

- जल का पी.एच. 7–8 के बीच बनाए रखें। आवश्यकता हो तो चूना (200–300 किग्रा/हेक्टेयर) का प्रयोग करें।
- पानी में ऑक्सीजन की मात्रा पर्याप्त रखें तथा सुबह के समय एरेटर का उपयोग करें।
- बारिश के समय चारा डालने से बचें, क्योंकि अधिक चारा अपचय होकर जल को प्रदूषित कर सकता है।
- जल को कीटाणुरहित रखने हेतु सप्ताह में एक बार पोटाश (2–3 किग्रा/हेक्टेयर) का प्रयोग करें ।
- जल की पारदर्शिता 30–40 सेमी के बीच होनी चाहिए। यदि बहुत कम हो जाए तो खाद डालना बंद करें।
- वर्षा के समय तालाब की मेड़ को मजबूत रखें, कहीं से पानी का रिसाव न हो।
- जलनिकास स्थल पर जाली लगाएं ताकि मछलियाँ बाहर न निकल सकें।

रेशम

- मानसून व्यवसायिक फसल का कीट पालन प्रारंभ होने जा रहा है इस हेतु कीटपालक/किसान 3 चक्रों में उपकरणों, कीट पालन भवन का विशुद्धीकरण का कार्य पूर्ण कर लें।
- टसर रेशम कीटपालन हेतु समस्त कार्यवाही यथा विशुद्धीकरण कर लें।
- कृषक/कीटपालक ई–डिस्ट्रिक विभागीय यू.आर.एल. ***http://sericulture.eservicesup.in*** पर अपना पंजीकरण कराते हुये आवश्यक कीटाण्ड मात्रा आरक्षित करा लें। किसी भी प्रकार की असुविधा/जानकारी के लिये दिये गये नंबर पर सम्पर्क करें 7388305554 ।

वानिकी

- वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य करें।

राज्य आपदा प्रबंधन

- राज्य सरकार (बेमौसम भारी वर्षा/अतिवृष्टि, आकाशीय बिजली, आंधी–तूफान, नाव दुर्घटना, सर्पदंश, सीवर सफाई/गैस रिसाव, बोरवेल में गिरना, मानव वन्य जीव द्वन्द (जंगली जानवरों का हमला), कुआं, नदी, झील, तालाब, पोखर, नहर, नाला, गढ्ढा, जलप्रपात में डूबना एव वनरोज व सांड के आघात से मृत्यु) द्वारा अधिसूचित आपदाओं के सापेक्ष मृत्यु होने की स्थिति में पीड़ित परिवारों को रु. 4 लाख की अहैतुक सहायता प्रदान की जाती है।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 28 अगस्त, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः–

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(संजय सिंह)
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।

11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
49. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

(**विनोद कुमार तिवारी**)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की तेरहवीं बैठक दिनांक 21 अगस्त, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद।
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
3. डा. राजर्षि कुमार गौड़, उपमहानिदेशक (आर.पी.एम.सी), उपकार, लखनऊ।
4. डा. परमेन्द्र सिंह, उपमहानिदेशक (कृ.शि.त.ह.), उपकार, लखनऊ
5. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
6. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी कृषि मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
7. श्री के.पी.सिंह, उप कृषि निदेशक, (सांख्यिकी), कृषि निदेशालय, उत्तर प्रदेश।
8. श्री अरविंद कुमार, संयुक्त कृषि निदेशक, धान्य फसलें, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
9. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
10. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
11. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
12. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑलनाइन)।
13. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
14. डा. हिमांशु तिवारी, तकनीकी सहायक महानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
15. श्री अभिजीत, वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि प्रसार), उपकार, लखनऊ।
16. डा. रिन्नी सिंह, वैज्ञानिक अधिकारी (पादप प्रजनन/जैव प्रौद्योगिकी), उपकार, लखनऊ।
17. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
18. डा. संजय कुमार मिश्र, उपनिदेशक, पशुधन विकास, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
19. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
20. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ (ऑलनाइन)।
21. डा. चंद्रकात तिवारी, सहायक प्राध्यापक, वन जीव विज्ञान एवं वृक्ष सुधार विभाग, बांदा कृषि एवं प्रौ. वि. वि., बांदा (ऑलनाइन)।